अभिव्यक्ति

बिरला शिशु विहार, पिलानी

विद्यालय पत्रिका / वर्षिक अंक / अक्टूबर, 2017

संपादकीय

भाषा की जननी (संस्कृत) की दुलारी व चहेती बेटी हिंदी हिंद और हिंदुस्तानियों के हृदय पर राज करती हुई विश्व की अधिकतम बोली जाने वाली भाषा के रूप मे जानी जाती है| भाषा मानव जीवन की एक सामान्य व सतत प्रक्रिया है जिसे मानव को ईश्वर द्वारा दिया गया अमूल्य उपहार कहा जाता है| भाषा जीवन को न केवल वैज्ञानिक स्तर प्रदान करती है अपितु जीवन की दिशा भी तय करती है भावनाओं का एक वातावरण मन में तैयार करती है और हमें विचाराभिव्यक्ति के लिए राह प्रदान कराती है| अभिव्यक्ति मन को उद्वेलित करने वाले , मन में उपजने वाले उद्‌गारों का एक ऐसा समूह है जो मनुष्य की भावनाओं को शब्द रूप में चित्रित करता है|

इस "अभिव्यक्ति" पत्रिका के माध्यम से 21 वीं सदी के विद्यार्थियों के मन के उद्‌गारों को एकत्रित करने का सफल प्रयास किया गया है |

स्वरमाला

अ : अपने आप की तुलना किसी से मत करो| यदि ऐसा कर रहे हो तो आप स्वयं अपना अपमान करते हो |
आ : आलसी को विद्‌या कहाँ, अनपढ़ को धन कहाँ, निर्धन को मित्र कहाँ और अमित्र को सुख कहाँ|
इ : इंतज़ार करने वालो को सिर्फ उतना ही मिलता है जितना कोशिश करने वाले छोड़ देते है|
ई : ईष्या से दूर रहें क्योंकि यही सब बुराईयों का मूल है |
उ : उन्नति उसी की होती है जो धैर्य और संयम रखता है |
ऊ : ऊंचा पद प्राप्त करने के लिए हमे कठोर परिश्रम करना होगा |
ऋ : ऋषियों जैसा धैर्य जीवन को उन्नत राह पर ले जाता है |
ए : एक-एक बूँद से ही घड़ा भरता है |
ऐ : ऐनक गाँधी जी का दिखाता राह हमको चलना उस राह पर |
ओ : ओजस्वी व्यक्ति घमन्ड नहीं करते |
औ : औरो की कमी बताने से अच्छा अपनी कमी को सुधारना चाहिए |
अं : अंत में सफलता उसी को मिलती है जो परिश्रम करता है |
अ : अहा ! ज़िन्दगी ! कितनी सुंदर |

व्यंजनमाला सुविचार :-

क : कर्म सदैव सुख नही ला सकता, परन्तु कर्म के बिना सुख नहीं मिलता|
ख : खाली दिमाग शैतान का घर होता है|
ग : गुणों को जो अपनाता है, वहीं आगे बढता है|
घ : घृणा व्यक्ति से नहीं, बुराई से करो|
च : चरित्र की शुद्धी ही सारे ज्ञान का ध्येय होता है|
छ : छोटी-छोटी कोशिश से ही जीवन में एक बड़ा बदलाव लाया जा सकता है|
ज : जिज्ञासा ज्ञान के दरवाज़े खोलती है|
झ : झगड़ने से किसी भी परेशानी का हल नहीं निकलता है|
ट : टालना आलस्य की निशानी है, करना जीवन की चेतना|
ठ : ठोस करो शरीर को पत्थर के समान, मन रखो कोमल कमल के समान |
ड : डग में डगमग कदम बढ़ाते चलना, रुकना नहीं, बढ़ते रहना ही जीवन है |
ढ : ढलाई से उतरते वक्त संभलकर चलना मंजिल तक पहुँचाता है|
त : तकदीर से ज्यादा किसी को नहीं मिलता|
थ : थम जाती है ये जिंदगी जब आशा की किरण छूट जाती है|
द : दुनिया एक खेल है, जहाँ जीतने वाला हारने के समान है और हारने वाला जीतने के समान है|
ध : धैर्य सफलता का प्रमुख आधार है |

न : निरंतर आगे बढ़ना जीवन का नियम है|
प : पाप से घृणा करो, पापी से नहीं|
फ : फल की इच्छा मत करो, कर्म करते जाओ|
ब : बुद्धिमान व्यक्ति वही है जो जानता है, कहाँ बोलना चाहिए और कहाँ मौन रहना चाहिए|
भ : भविष्य का अनुमान लगाने के लिए अतीत का अध्ययन करना चाहिए|
म : मारने वाले से बचानेवाला बड़ा होता है|
य : यदि आप सूरज की तरह चमकना चाहते हो तो पहले सूरज की तरह जलना सीखो|
र : रुकना नहीं चाहिए हमें विघ्न बाधा और मुसीबतों से कभी भी हार कर, निराशा होकर|
ल : लोभ पाप का मूल है|
व : वह इंसान जो अकेले रहकर भी खुश है असल में वहीं इंसान कहलाने योग्य है|
श : शिखर पर पहुँचने के लिए सामर्थ्य चाहिए, फिर वो माउंट एवेरेस्ट हो या जीवन का शिखर हो |
ष : षटकोण के रंगों को अपने जीवन में उतारो|
स : संसार में सज्जन मनुष्य ही स्वतंत्र होते है, स्वार्थी व छोटी सोच वाले मनुष्य दास होते है|
ह : हमें हर कार्य को सोच समझकर करना चाहिए|
क्ष : क्षत्रिय जंग के मैदान में भले ही जीत जाये परन्तु असली क्षत्रिय वही होता है जो अपने जीवन में जीत का परचम लहराता है|
त्र : त्राहि -त्राहि करने से समस्या का समाधान नही होता है असली मनुष्य वही होता है जो संकट के समय धैर्य से काम लेता है|
ज्ञ : ज्ञान बांटने से ही बढ़ता है|
श्र : श्रमिक की तरह मेहनत करोगे तभी सफलता तुम्हारे कदम चूमेगी|

दीक्षा सैनी, जाह्नवी, हर्षिता, कक्षा 6 से 10 तक

हिंदी भाषा के महत्वपूर्ण तथ्य

प्रत्येक राष्ट्र की पहचान उसकी भाषा और उसकी संस्कृति से होती है और पूरे विश्व में हर देश की एक अपनी भाषा और अपनी एक संस्कृति है जिसकी छांव में उस देश के लोग पले बड़े होते है| निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल। बिन निज भाषा-ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल।।

विविध कला शिक्षा अमित, ज्ञान अनेक प्रकार। सब देसन से लै करहू, भाषा माहि प्रचार।।

अर्थात निज यानी अपनी मूल भाषा से ही उन्नति सम्भव है, क्योंकि यही सारी हमारी मूल भाषा ही सभी उन्नतियों का मूलाधार है। और मातृभाषा के ज्ञान के बिना हृदय की पीड़ा का निवारण सम्भव नहीं है। हमे विभिन्न प्रकार की कलाएँ, असीमित शिक्षा तथा अनेक प्रकार का ज्ञान सभी देशों से जरूर लेने चाहिये, परन्तु उनका प्रचार मातृभाषा में ही करना चाहिये| उपरोक्त पक्तियाँ भारतेंदु हरीशचन्द्रजी की हैं | हिंदी भाषा के प्रचार प्रसार में भारतेंदु हरीशचन्द्र का योगदान अविस्मरणीय है |

- संस्कृत से पाली, पाली से प्राकृत, प्राकृत से अपभ्रंश और इसी अपभ्रंश से हिन्दी का जन्म हुआ। हिन्दी भाषा का जन्म 1000 ई. के आसपास ही हुआ था, किंतु उसमें साहित्य रचना का कार्य 1150 या इसके बाद आरंभ हुआ।
- हिंदी भाषा को राष्ट्रभाषा बनाने के लिए कई बार आन्दोलन हो चुके है सबसे पहले दयानंद सरस्वती ने किया था जिसे बाद में महात्मा गांधीजी ने भी आन्दोलन चलाये| कई लोगों के अथक प्रयास के बाद हिंदी कोराष्ट्रभाषा बनाने का निर्णय लिया गया क्योंकि "किसी भी भाषा को राष्ट्रभाषा बनने के लिए उसमें सर्वव्यापकता, प्रचुर साहित्य रचना, बनावट की दृष्टि से सरलता और वैज्ञानिकता, सब प्रकार के भावों को प्रकट करने की सामर्थ्य आदि गुण होने अनिवार्य होते हैं। यह सभी गुण हिंदी भाषा में हैं| अत एव हिंदी को भारत की संवैंधानिक राजभाषा के रूप में स्वीकार कर लिया गया और 14 सितम्बर 1949 को अधिकारिक रूप से राष्ट्रभाषा का दर्जा दे दिया गया|
- विश्व की सबसे उन्नत भाषाओ में हिंदी भाषा सबसे अधिक व्यवस्थित भाषा है अर्थात हम जो हिंदी में लिखते है वही बोलते भी है और वही उसका मतलब भी होता है जबकि अन्य भाषाओ में ऐसा नही है|

* हिंदी भाषा बोलने में सबसे अधिक सरल और लचीली भाषा है हिंदी भाषा को बोलना और समझना बहुत ही आसन है

- हिंदी विश्व की चीनी भाषा के बाद दूसरी सबसे ज्यादा बोले जाने वाली भाषा है हिंदी हमारे देश भारत के अतिरिक्त पाकिस्तान, फिजी, मारिसस, गयाना, सूरीनाम और नेपाल में सबसे अधिक हिंदी भाषा बोली जाती है
- दुनिया की एकमात्र हिंदी ही एक ऐसी भाषा है जो कि सबसे अधिक और तेजी से प्रसारित होने वाली भाषाओ में से एक है
- हिंदी भाषा के मूल शब्दों में लगभग ढाई लाख से अधिक शब्द है
- हिन्दी का प्रथम महाकवि - चन्दरबरदाई
- हिंदी का प्रथम महाकाव्य - पृथ्वीराजरासो
- हिंदी का प्रथम नाटक - नहुष (गोपालचंद्र, १८४१)
- हिंदी का प्रथम काव्य-नाटक - 'एक घूँट' (जयशंकर प्रसाद ; 1915 ई.)
- हिन्दी का प्रथम ज्ञानपीठ पुरस्कार विजेता - सुमित्रानंदन पंत (१९६८) (चिदम्बरा के लिये प्राप्त हुआ)
- हिन्दी का प्रथम संगीत-ग्रन्थ - मानकुतूहल (ग्वालियर के राजा मानसिंह तोमर द्वारा रचित, 15वीं शती)
- हिन्दी का पहला समाचार पत्र - उदन्त मार्तण्ड (पं जुगलकिशोर शुक्ल)
- हिन्दी की प्रथम पर्यावरण पत्रिका - पर्यावरण डाइजेस्टं (संपादक - डॉ. खुशाल सिंह पुरोहित)
- हिन्दी का प्रथम विश्वकोश - हिन्दी विश्वकोश
- हिन्दी का प्रथम मानक शब्दकोश - हिंदी शब्दसागर
- हिंदी के सर्वप्रथम गीतकार - विद्यापति
- हिंदी में सर्वप्रथम मुकरियों की शुरुआत - अमीर खुसरो
- हमारे पूर्व प्रधानमन्त्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी पहले भारतीय थे जिन्होंने संयुक्त राष्ट्रसंघ में हिंदी में भाषण देकर सबको चौंका दिया था। हिन्दी भाषा अपने आप में अनेक विविधताओं एवं गुणों को समेटे हुए है | यह भाषा राष्ट्रभाषा, राजभाषा, सम्पर्क भाषा, जनभाषा के सोपानों को पार कर विश्व भाषाबनने की ओर अग्रसर है |

देव वाणी - संस्कृत-भाषा

सर्वासु भाषासु संस्कृतभाषाप्रचीनतमा भाषा सर्वासु जननी च अस्ति| या परिष्कृता, परिशुद्धा, दोषरहिताभाषाभवति सा एव संस्कृतभाषा इति कथ्यते| विश्वस्यप्राचीनतमा:- चतुर्वेदाः, पुराणानि, रामायणम्महाभारतं च अस्याम् एव भाषायां लिखिताःसन्ति| भारतस्यसांस्कृतिकंमहत्त्वं अस्यामेव भाषायां सुरक्षितम् अस्ति |अन्या भारतं एकतायाः सूत्रे निबद्धं |संस्कृतभाषायाः साहित्यं समुद्रवत् व्यापकं अस्ति |संस्कृतस्य व्याकरणम् अद्वितीयंअस्ति| अस्माकं संस्कृतिः अस्यामेव प्रतिबिम्बिता वर्तते|अस्माकं पूर्वजानां अनुसंधानानि च अस्यामेव सन्ति|

निशा साङ्गवान 10 B

माता

जीवने मातायाः स्थान सर्वोपरि भवति | माता सृष्टिः-रूपा एव भवति | माता शिशु जन्यते, पालनं लालनं च क्रियते ;स्वजीवनं पूर्णरूपेण समर्पयते | माता सदृशः पिता अपि भवति किन्नुमाता स्थानं अद्वितीय भवति| संस्कृत भाषायां मातृ शब्दस्य कृतेजननि, जनी, प्रसु, जन्यत्रि, अम्बा, सावित्री, अम्बिका, अल्ला, अक्का, अत्ता इत्यादि पर्याय-शब्दाः सन्ति| शिशोः पालन एवं जीवन विषये मातायाः सर्वोपरि स्थानं भवति| माता इति पदम् स्पष्टिकर्तुं सुलभकार्यं न अस्ति| न केवल मानवाः इतरेषु अन्यजीवेषु अपि मातृत्वम् सुस्पष्टं विद्यते| प्रत्येक शिशोः जीवनं मातया बिना कठिनं भवति| अस्माकं देशे स्वमातरं अपेक्षया तरवः, नद्यः, जन्मभूमिः, भाषाः इत्यादयः अपि मातृवत् पूजनीयाः मन्यते|

नेहा शर्मा 10 C

संस्कृतस्य इतिहासः

संस्कृतम् जगतः एकतमा अतिप्राचीना समृद्धा शास्त्रीया च भाषा वर्तते । संस्कृतं भारतस्य जगत: वा भाषास्वेकतमा प्राचीनतमा । इयं भाषा न केवलं भारतस्य अपि तु विश्वस्य प्राचीनतमा भाषा इति मन्यते । इयं भाषा तावती समृद्धा अस्ति यत् प्राय: सर्वासु भारतीयभाषासु न्यूनाधिकरूपेण अस्या: शब्दः प्रयुज्यन्ते. अत: भाषाविदां मतेन इयं सर्वासां भाषाणां जननी मन्यते । पुरा संस्कृतं लोकभाषा आसीत् । जना: संस्कृतेन वदन्ति स्म ॥
विश्वस्य आदिम:ग्रन्थ: ऋग्वेद: संस्कृत भाषायामेव अस्ति । अन्ये च वेदा: यथा यजुर्वेद:, सामवेद:, अथर्ववेदश्च संस्कृत भाषायामेव सन्ति ।आयुर्वेद - धनुर्वेद - गन्धर्ववेदार्थवेदाख्या: चत्वार: उपवेदा: अपि संस्कृतेन एव विरचिता: ॥
सर्वा: उपनिषद: संस्कृते उपनिबद्धाः । अन्ये ग्रन्था: - शिक्षा, कल्प:, निरुक्तम्, ज्योतिषी, छन्द:, व्याकरणं, दर्शनम्, इतिहास:, पुराणं, काव्यं, शास्त्रं चेत्यादयः ॥
महर्षि - पाणिनिना विरचित: अष्टाध्यायी इति संस्कृतव्याकरणग्रन्थ: अधुनापि भारते विदेशेषु च भाषाविज्ञानिनां प्रेरणास्थानं वर्तते ॥
वाक्यकारं वररुचिं भाष्यकारं पतञ्जलिम् |
पाणिनिं सूत्रकारं च प्रणतोऽस्मि मुनित्रयम् ॥

यशस्वीजांगिड़ 10 B

भाषासु मुख्या मधुरा प्राचीना विश्वमुखी। भाति संस्कृतभाषेयं सर्वदा सर्वदा सती ॥
उन्नतेन स्थितिमता हिमवद्भूभृता यथा। त्वङ्गत्तरङ्गया पुण्यसरिता गङ्गया यथा ॥
तथैव भारतोवीर्यदिव्यसंस्कृतभाषया| सरस्वत्यापि विख्याता विभति वसुधातले ||

विनीता पारीक 9 A

आदर्शः छात्रः

जगति मानव जीवनं सर्वाधिक महत्त्वपूर्णमस्ति| प्राचीन भारतीय संस्कृतौ मानव जीवनं चतुर्षु भागेषु विभक्तमस्ति अनेनैव विभागेन चत्वारः आश्रमाः सन्ति -ब्रह्मचर्य, गृहस्थ,वानप्रस्थ,संयासश्च| ब्रह्मचर्याश्रममेव विद्या अर्जनाय भवति| अस्मिन काले बालकः गुरुजनेभ्यः विद्यार्जनं करोति| यः नियमानुसारेण परिश्रमंपूर्वकम् दत्तचित्तेन च विद्यार्जानं करोति, सः एव आदर्शः छात्रः भवति| अध्ययनं परम् तपो उच्यते| छात्रस्य जीवनं साधनामयं भवति| सः सर्व भौतिकं सुखं त्यक्त्वा अनेक विधान् कष्टान् च सोढ्वा विद्यार्जनम् करोति| उक्तम् केनचित् कविवरेण-सुखार्थी वा त्यजेत् विद्या विद्यार्थी वा त्यजेत् सुखम्| सुखार्थिनः कुतो विद्या. विद्यार्थिनः कुतो सुखम्||
छात्र जीवन,जीवनमेव मानवजीवनस्य प्रभातवेला आधारशिला च वर्तते| एतस्मिन् जीवने परिश्रमस्य महति आवश्यकता वर्तते| आदर्श-छात्रः अनुशासितःभवति, गुरूणां सम्मानम्करोति, असत्य वदनम् कदापि न करोति| सः सदाचार-दया-सत्यं-अहिंसा-विनय-क्षमा-सेवा-कर्तव्यपरायणता-परिश्रम-अनुशासन-सम्मानादयो गुणाः समायान्ति |

भावना X B

स्वर रागिनी

नवजीवन

शुरू करो प्रथा नई, भरो जीवन में नया उल्लास| विकसित करो सोच नई, भरो पंखो में नया विश्वास|
लाओ आबो हवा में नया परिवर्तन, करो एक नये युग का सृजन| बहिष्कार करो सहानुभूति का और आह्वान करो समानुभूति का| रुख करो एक नये सवेरे की ओर| बुलंद करो अपने अंदर की आवाज को जगाओ खुद में सोए हुए आत्म विश्वास को, उठाओ आवाज अन्याय के खिलाफ भरो अपने अन्दर एक नया जोश, आखिर कब तक झेलोगे समाज का आक्रोश

हिमांशी लाम्बा, 10 बी

शीर्षक - हिंदी

संस्कृत की एक लाडली बेटी है ये हिंदी बहनों को साथ ले कर चलती है ये हिंदी सुन्दर है, मनोरम हैं मीठी है, सरल है, ओजस्विनी है और अनूठी है ये हिंदी| पाथेय है, प्रवास में, परिचय का सूत्र है, मैत्री को जोड़ने की सांकल है, ये हिंदी| पढ़ने और पढ़ाने में सहज है, सुगम है, साहित्य का असीम सागर है ये हिंदी| तुलसी, कबीर, मीरा ने इसमें ही लिखा है कवि सूर के गागर की सागर है ये हिंदी| वागेश्वरी का माथे पर वरदहस्त है, निश्चय ही वन्दनीय माँ-सम है ये हिंदी| अंग्रेजी से भी इसका कोई बैर नहीं है, उसको भी अपनेपन से लुभाती है ये हिंदी| यूँ तो देश में कई भाषाएँ और हैं, पर राष्ट्र के माथे की बिंदी है ये हिंदी

निक्कू कुमारी, अष्टम - अ

मानव हो बाती बन मानवता का दीप जलना.....

मानव हो बाती बन मानव का दीप जलाना सबको साथ लेकर चलना और फिर से विश्वास जगाना नहीं ख़तम हुई इंसानियत बाकी हैं अभी भी कुछ में| अपनी जन्मी बुराइयों को मिटाना तोड़ देना उन बन्धनों को जो रोके हुए हैं विकास का पथ| सर्जन के पथ पर बढ़े चलना जो सपने संजोए ये उनको साकार करते चलना जो पाया माँ धरती से वह मातृभूमि के हित में करते चलना| जो बैठे मुखौटा पहने अच्छाई और सच्चाई का और देख रहे हित अपना उन जयचंदो को जड़ से तुम मिटाना| जो वीर कर रहे हैं| प्रतिदिन देश भूमि की रक्षा छोड़ अपने प्राणों की चिंता हाथ उठाकर सलाम उन्हें तुम करना| मानव हो बुझ रहे ईमान को विश्वास देना फिर नया मानव बनाना रुढियों को तोड़ देना| मानव हो बाती बन मानवता का दीप जलना

अदिति ओला कक्षा दसवीं

अनुशासन

अनुशासन में रहना सीखें, मिलजुल सुख-दुःख सहना सीखें विद्यालय के नियम न तोड़े, सही मार्ग हम कभी न छोड़ें गुरु का कहना हम मानेगें समय का व्रत हम ठानेगें, हम उन्नति करते जायेगें, नित्य सफलता हम पायेगें हम सुभाष जैसे वीर बनेगें, गाँधी जैसे धीर बनेगें नेहरु सदृश महान बनेगें, हम भारत की शान बनेगें |

श्रुति,10 'सी'

आगे बढ़

चल पड़े पैर जिस और पथिक तेरे, उस पथ से फिर डरना कैसा यह रुक-रुक कर बढ़ना कैसा?
मार्ग दुर्गम हैं सरल नहीं यह जानकार पीछे क्यों हट गया? अपने प्रथम प्रयास को विफलता में बदलता देख पथ क्यों भूल गया ?
जब प्रगति का नाम जीवन, तब राह में यह अकाल विराम कैसा?
छूटा तीर कमाण से नहीं रुकता लक्ष्य भेदन किये बिना तो तू क्यों रूक गया लक्ष्य तक पहुचें बिना| कल्प कल्प का धैर्य जुटे जब बनता तब प्रपात हैं| बाती जो नहीं जलाता है| रौशनी वो नहीं पाता है| मेहनत कर आगे बढ़ हो पथ पर निरंतर अग्रसर तू| हो सदा गतिशील, तेरा लक्ष्य प्रतिक्षण, निकटतर होगा

अदिति ओला कक्षा दसवीं "ब"

माँ

माँ वह दरिया है ,जो सूखकर भी अपने किनारों की आड़ चाहती है माँ वो आशा है,जो टूट कर भी अंतिम पल तक जीवित रहती है, माँ वो स्पर्श मणि है, जो पत्थर को भी मोम बना देती है, माँ वो मौन व्यथा है जो चुप होते हुए भी बहुत कुछ कहती है, माँ वो ज्योति है जो इस संसार में भाग्य से मिलती है, माँ वो दर्पण है जिसमे देखने पर ममता की मूरत नजर आती है, माँ वह सम्बन्ध है जिसकी किसी भी दौर में परिभाषा तथैव रहती है, माँ वो गाथा है जो पुनः-पुनः लिखने पर भी अधूरी ही रहती है |

निशिता चौधरी , अष्टम ' ब '

शीर्षक-क्या यही है

क्या यही है?
देख विषमता इस देश की, उठा मन मे एक प्रश्न क्या यही है वह आजादी, जिसके लिए मनाते हम हर साल जश्न। बेरोजगारी से पांव है फूले, गरीबी झूल रही है झूले सडकछाप बनते माननीय, बाकी सबकी स्थिति है दयनीय सोचकर इन सब बातो को उठती मन मे एक लगन, क्या यही है वह प्रगति जिसके आवगमन के लिए हम है मग्न। महंगाई ने पांव पसारे, नेता भक्षक बन बैठे है सारे भ्रष्टाचार की कोपले है फूटी, हर दिन किसी की आस है टूटी सुन कर यह अजनबी कहानी किया मन ने मनन चिंतन हां यही है वह दिन मिलाना होगा आसमा से जमी जागकर ही मिलेगा हर हल सोकर हम खो देंगे हर पल।।

पूजा साँगवान XI A

पहचानो अपने आप को

सूर्य की किरण आज दिखाई दी है, समुद्र में लहरें हिलोरे ले रही हैं। पानी की गति बहुत तेज है, आखिर कहीं तो पानी गिरा ही होगा।।
परिवर्तन की चिंगारी आज उठी है पूरे देश में, शरीर के किसी न किसी अंग में तो। रोंगटे खड़े हुए ही होंगे, अब एक अलग ही जोश आया है हर इंसान में।।
निराश मनुष्य अब न होगा निराश, सुदृढ़ सपने होकर रहेंगे साकार। झाँको अपने अंदर और पहचानो अपने आप को, सोचो की किसी लायक हो तुम, और बदल कर रख दो अपने आप को।।
यदि पहचान लिया खुद को, कोई बुराई न टिक पाएगी, हर बुराई तुम्हारे आगे शीश झुकाएगी। और चाहो तो तुम हिला सकते हो निराशा की नींव को, उठो, जागो और पहचानो अपने को।।

मुस्कान श्योराण X "A"

शंख

*शंख के विषय में कुछ रोचक व ज्ञानवर्धक तथ्य :-

* शंख मूल रूप से हिंदु एवं बौद्ध संस्कृतियों में धार्मिक महत्व रखता है|
* यह एक प्राकृतिक हवा वाद्य है जो आसपास के वातावरण को शुद्ध करके सकारात्मक ऊर्जा क्षेत्र बनाता है|
* हिंदु धर्मावलम्बी अपने-अपने इष्टदेव का आहवान करने के लिए शंख का उपयोग करते हैं|
* शंख को किसी कार्य के शुभारम्भ के लिए अत्यन्त पवित्र माना जाता है|
* हिंदु मतानुसार दक्षिणावर्ती शंख भगवान विष्णु के साथ जुड़ा हुआ है और वामावर्ती शंख देवी लक्ष्मी के साथ जुड़ा हुआ है|
* शंख कुबेर के नौ दिव्य खजाने जिसे नवनिधि कहा जाता है ,उनमें से एक है|
* महाभारत के युद्ध में प्रत्येक योद्धा का एक शंख था| जिसका एक विशिष्ट नाम था :-

- प्रभु श्रीकृष्णजी के शंख का नाम - पांचजन्य|
- युधिष्ठिर के शंख का नाम - अनंतविजया|
- भीम के शंख का नाम - पौंड्रिक|

- अर्जुन के शंख का नाम - देवदत्त |
- नकुल के शंख का नाम - सुघोष |
- सहदेव के शंख का नाम - मणिपुष्पक |
- समुद्र मंथन से प्राप्त 14 रत्नों में से छठवा रत्न शंख है |

दीपक बोलता नहीं उसका प्रकाश परिचय देता है | ठीक उसी प्रकार आप अपने बारे में कुछ न बोलें अच्छे कर्म करते रहें ||

साहित्यिक क्लब की गतिविधियाँ

साहित्यिक क्लब के अंतर्गत निम्नलिखित प्रतियोगिताएँ प्रतिवर्ष आयोजित की जाती हैं |
कक्षा 3 से 5 तक - सुलेख तथा काव्य पाठ प्रतियोगिता
कक्षा 6 से 8 तक - काव्य पाठ, वाद-विवाद, भाषण प्रतियोगिता
कक्षा 9 से 10 तक - वाद-विवाद,कहानी लेखन, संस्मरण लेखन लघु नाटिका प्रतियोगिता
इसके अतिरिक्त संवाद लेखन, काव्य लेखन,विज्ञापन लेखन, पोस्टर बनाना, निबंध लेखन, अनुच्छेद लेखन, स्वविचाराभिव्यक्ति, सूक्ति, नारा लेखन, श्लोक वाचन, गीता श्लोक वाचन, मंचीय अभिव्यक्ति, प्रार्थना सभा प्रस्तुति आदि गतिविधियाँ करवाई जाती हैं |

उपलब्धियाँ

अंतर सदनीय भाषण प्रतियोगिता

कक्षा - VI

स्थान	नाम	सदन	अंक
I	हिमानी	टैगोर	253
I	दिव्यांशी	गाँधी	252
III	अनमोल शर्मा	गाँधी	236
	धरा	रमन	233

कक्षा - VII

स्थान	नाम	सदन	अंक
I	अग्रिमा , समृधि	रमन, गाँधी	224.5
II	जया	सुभाष	221
III	निहारिका	रमन	220

कक्षा - VIII

स्थान	नाम	सदन	अंक
I	दिशिता	गाँधी	298.5
II	खवाइश	सुभाष	276.5
III	वर्षा	सुभाष	253.3

अंतर सदनीय लघु नाटिका प्रतियोगिता

स्थान	सदन	कुल अंक
I	रमन	51
II	टैगोर	48.5
III	गाँधी	46.5

हिंदी सुलेख प्रतियोगिता

कक्षा - III

I	आरोही राणा	III A
II	दिपांशी	III A
III	राशी सिंह	III C
सांत्वना	जतिन बराला	III B

कक्षा - IV

I	दिया	IV B
II	याशिका डांगी	IV B
III	एंजल	IV B

कक्षा - V

I	शिक्षा	V A
II	निशु	V B
III	ईशा शेखावत	V A

हिंदी काव्य पाठ प्रतियोगिता

कक्षा - IV

I	यशस्वी सिंह	IV A
II	रायन रहमान	IV B
III	दिव्यांशी एंजल	IV B IV B

कक्षा - V

I	तेजल गोयल	V C
II	संस्कार	V B
III	रितिका मिश्रा स्निग्धा	V C V A
IV	दीप्ति	V C

कक्षा - VI

I	अग्निभ करमाकर	VI A
II	हिमानी	VI C
III	आर्यन जाखड दिव्यांशी	VI B VI C

वाद विवाद प्रतियोगिता

कक्षा - VII

स्थान	प्रतिभागी का नाम	कक्षा
I	ऋषि कुलश्रेष्ठ	VII C
II	सुप्रिया	VII A
III	निकिता गौड़	VII C
IV	वृंदा डाडा	VII C

हिंदी कहानी लेखन प्रतियोगिता परिणाम

कक्षा - IX

स्थान	नाम	कक्षा
I	मानसी	IX B
II	कौशल	IX B
III	तमन्ना	IX B
सांत्वना	बनिता	IX A

वाद विवाद प्रतियोगिता

कक्षा - X

समूह संख्या	समूह संख्या	कक्षा	स्थान	प्राप्तांक
7	मुस्कान	X A	I	45
6, 10	परमजीत, रिया	X C , X C	II	38.5
4	प्रतीक्षा	X A	III	34

हिंदी संस्मरण लेखन प्रतियोगिता परिणाम

कक्षा - IX

स्थान	नाम	कक्षा
1	मानसी	IX B
2	कौशल	IX B
3	अरुण	IX C
सांत्वना	सार्थक	IX A

संपादक मंडल

संपादक - श्रीमती नमिता पारीक
सह संपादक - श्रीमती ज्योति प्रसाद एवं श्रीमती सुधा रुंथला
प्रारूप समिति - श्रीमती रमा कुंतल, श्रीमती शालिनी मिश्रा, श्रीमती सरिता शर्मा
छात्रा संपादक - मुस्कान (10 अ), अदिति ओला (10 ब), दीक्षा सैनी (9 ब), जाहनवी जोशी (9 ब)

बिरला शिशु विहार

पिलानी-(राजस्थान)
दूरभाष : 01596-242208, 242195